## सम्पादक की कलम से



### क्या ग्रामीण क्षेत्र में भी अंग्रेजी माध्यम होगा?



भारत में अंग्रेजी राज्य स्थापित होने के पहल विभिन्न प्रदेशों में अलग—अलग भाषा का प्रचलन था। मुगल राज्य आने के पहले भी स्थानीय भाषा भाषि लोग निवास करते थे। इनके भी प्राकृत, पाली भाषा, द्रविड भाषा, का ही उपयोग होकर शासन, प्रशासन, जनमानस, परस्पर सभी क्षेत्रों में अपनी —अपनी भाषा का माध्यम अपनाते रहे है।

मुगल काल में उर्दू अरबी भाषा राजकाज की भाषा का प्रचलन प्रारम्भ हुआ। सामान्य जन मानस भी उसी भाषा को अपनाते रहें।

अंग्रेजी साम्राज्य आने के बाद हमारे महाद्वीप में राजकाज की भाषा अंग्रेजी ही हो गई और जो लोग अंग्रेजी जानने लगे उन्हें सरकारी काम—काज में अवसर भी मिलते गये। अंग्रेजी भाषा सरकार ने अपनाई जिसका प्रभाव शहरों में पड़ा और शहरों के निवासी सरकारी कामकाज के लिए अंग्रेजी सीखने लगे और हमारे देश में भी भाषा की गुलामी का युग प्रारम्भ हो गया। अंग्रेजी का प्रयोग राजकाज के साथ व्यापार उद्योग में भी होने लगा, जिसके कारण शहरों के प्रबुद्ध लोगों ने अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के स्कूल, कालेजों में शिक्षित करना प्रारम्भ कर दिया । किन्तु ग्रामीण स्कूलों में अंग्रेजी भाषा को पढ़ाने वाले शिक्षकों की कमी रहो फिर गाँवों में अंग्रेजी का मोह होने ही नहीं पाया।

ग्रामीण स्तर पर सरकारी कामकाज की भाषा भी अपनी स्थानीय भाषा ही रही और स्कूल में भी अपनी भाषा को अपनाया जाता रहा, सरकारी दस्तावेज उर्दू में ही उपयोग होते रहें यहाँ तक अब तक ग्रामीण काम काज जो राजस्व विभाग में होता है वहाँ अभी भी उर्दू भाषा के दस्तावेजों का प्रचलन बना हुआ है। एवं उनके नाम भी उर्दू में प्रचलित है। यह परम्परा प्रायः हिन्दी, भाषि राज्यों में विद्यमान है।

भले ही स्थानीय नागरिक अपनी स्थानीय बोलचाल की भाषा हिन्दी मराठी बंगाली, उड़िया, तेलगू, कन्नड़, मल्यालम, तिमल, आदि की बोलचाल के साथ आपसी व्यवहार के लिए भी अपनी ही भाषा का प्रचलन अब तक चल रहा है। और स्थानीय स्तर पर अपनी भाषा पर सबको गर्व होता है। और प्रयास भी रहता है कि उसकी भाषा का ही स्थानीय लोग उपयोग करें।

भाषा को लेकर जगह—जगह आन्दोलन होते रहे हैं और सरकारने त्रिभाषा फीमूला भी अपनाने की पहल की, किन्तु ग्रामीण स्तर पर चाहे राष्ट्र भाषा हिन्दी हो या अर्न्तराष्ट्रीय भाषा अंग्रेजी हो इन भाषाओं की पहुँच चंदुओर अब तक नहीं बन पा रही है। और थोड़ा बहुत प्रयास हुआ तो स्थानीय स्तर पर आन्दोलन होने लगें।

इस परिवेश में अपनी भाषा के स्वाभीमान के चक्कर में ग्रामीण क्षेत्र तो पिछड़ गया ओर न राष्ट्र भाषा अपना सका और ना ही अंग्रेजी भाषा को सीख सका, शहरों में अंग्रेजी भाषा पढ़ने हेतु एक—से—एक बढ़कर एक पब्लिक स्कूल खुले हुए है, जहाँ मोटी राशि की फीस व खर्च शहरी धनवान, मध्यम वर्ग तक तो अपनी अपनी हैसियत के अनुसार अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम में शिक्षित कराने में सफल है और प्रायः शहरों में पढ़े लिखे बच्चों को ही पढ़ाई पूरी करने पर नौकरी मिल जाती हैं उद्योग व्यवसाय देश—विदेश में करने लायक समझ विकसित हो रही है। किन्तु ग्रामीण क्षेत्र अभी भी इस अवसर हेतु वंचित ही है। ग्रामीण परिवेश में ही रहने वाले परिवार आर्थिक तंगी के कारण जमाने की रतार में कदमताल नहीं कर पा रहे है। सरकार की कोई ठोस नीति नहीं बन सकी है।

शासन की भी मंशा शायद यही है कि ग्रामीण स्तर पर शहरों की भांति शासकीय स्कूल कालेजों में वहाँ के बच्चों को समान अवसर नहीं दिया जाये। यदि शासन समान अवसर देने की शिक्षानीति बनाले तो ग्रामीण स्तर के भी विद्यार्थी नौकरी—व्यवसाय, उद्योग में अगवाने करने से आगे बढ़ सकते है। हाँ थोड़े बहुत विद्यार्थि ग्रामीण स्तर से शहरों की और मुड़े गये हैं। परिणाम स्वरूप उनका परिवार तो तरक्की की और भी बढ़ गया । किन्तु जिनकी पँहुच शहरों में नहीं हो सकी वे प्रायाः समान अवसर पाने से वंचित ही है। क्योंकि उनकी सन्तानों की भाषा अंग्रेजी नहीं बन पा रही है। इस कटु सत्य पर चिन्तन होना चाहिए। केन्द्र को ऐसी शिक्षा नीति बनानी होगी, जिसमें ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों को भी समान शिक्षित होकर समान अवसर आगे बढ़ने हेतु मिल सके।

अपेक्षा है मोदी सरकार की शिक्षानीति में ग्रामीण स्तर के विद्यार्थियों को अंग्रेजी भाषा की समझ विकसीत कर समान अवसर दिलाने हेतु फण्ड की व्यवस्था हो पायेगी ? बहुत ही मुश्किल है क्योंकि केन्द्र का शिक्षा बजट तो "ऊँट के मुंह में जीरा" की भांति ही है । फिर भी ग्रामीण मतदाता चिन्तन करेंगे। अपने जनप्रतिनिधयों को मजबूर करेंगे कि उनके यहाँ भी सरकार की शिक्षानीति में समान अवसर पाने हेतु अंग्रेजी को अनिवार्य बनाकर, साधन संसाधन उपलब्ध करवाये तो आने वाली पीढी भी अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहुँच बना सके।

यह भ्रम दूर करना होगा कि आम नागरिकों को स्वदेशी अपने संस्कार पुरानी घीसी पीटी वयवस्था को बनाये रखने हेतु देव वाद में उलझायें रखे व गैर ग्रामीण ऊपर क्लास का तबका अपनी संतानों को राष्ट्रीय, अन्तराष्ट्रीय स्तर पर पकड़ बनाये रखने हेतु आगे बढ़ाते रहे। इस प्रकार दोहरी व्यवस्था पर शिक्षानीति में उचित प्रावधान कर समान रूप से आगे बढ़ने अवसर प्रदान करना होगा

इसलिए ग्रामीण क्षेत्रों में भी अंग्रेजी माध्यम अपनाने हेतु शिक्षा नीति बनाकर समुचित बजट प्रावधान होकर अवसर की समानता का मार्ग प्रशस्त कराने हेतु सरकार बचन बद्ध हो।

शमनाशयण चौहान

## क्या आप जानना चाहेगें?

महात्मा जोतिराव फुले (सन् 1827 से 1890) — आधुनिक महाराष्ट्र की सामाजिक क्रांति के अग्रदूत, परंपरागत समाज व्यवस्था के विरुद्ध बगावत करने वाले पहले महापुरुष, हजारों वर्षों से चली आई धार्मिक तानाशाही को चुनौती देकर उसके अंजर—पंजर ढीले कर देने वाले कर्मठ समाज सुधारक, सच्चे अर्थों में मानवतावादी महात्मा! महात्मा वही

होता है, जो सभी स्त्री—पुरुषों को समानता, स्वतंत्रता तथा बंधुता का लाभ दिलाने के लिए संघर्ष करता है, जो किसी मनुष्य का द्वेष नहीं करता और जो मानव के प्रति करूणा से भरकर सभी मानवों के समान अधिकारों के लिए जीवनभर लड़ता है। जोतिराव ने समाज की प्रगति में अवरोधक दुष्ट रुढ़ियों को तोड़कर हिंदू धर्म को विकासोन्मुख किया। जोतिराव ने महाराष्ट्र को धार्मिक, आर्थिक आदि किसी भी क्षेत्र में गुलामी को रहने देना नहीं चाहते थे और वे जनता को शूद्र, धर्मों, पंथो, संप्रदायों के संकीर्ण दायरे से निकालकर मानव धर्म के महासागर में ले जाना चाहते थे। उनका व्यक्तित्व बहुआयामी था, जिसका प्रमाण है उनके द्वारा किये गये निम्नलिखित कार्य

- (1) उन्होने सन् 1848 में पहली कन्याशाला खोली और सन् 1851 में अछूतों के लिए पहली पाठशाला खोली।
- (2) उन्होने हिन्दू धर्म के शूद्रों तथा अतिशूद्रों के कष्टों तथा दुखों और यातनाओं को अभिव्यक्ति दी।
  - (3) अपना कुँआ अछूतों के लिए खोल दिया।
- (4) विधवा—विवाह का समर्थन कर सन् 1864 में विधवा विवाह संपन्न कराया।
- (5) विधवाओं के अवैध बच्चों के लालन—पालन के लिए सन् 1863 में बाल हत्या प्रतिबंधक गृह खोला।
- (6) विधवाओं की गुप्त तथा सुरक्षित प्रसूति के लिए प्रसूतिगृह खोला और उस प्रसूतिगृह में जन्मे काशीबाई नामक विधवा के बच्चे को गोद लिया।
- (7) ब्राह्मण विधवाओं के मुंडन (केश वपन) को रोकने के लिए नाइयों को संगठित किया।
  - (8) बाल-विवाह का विरोध किया।
- (9) धर्म मूलक विषमता का उन्मूलन करने के उद्देश्य से 24 सितम्बर 1873 को 'सत्यशोधक समाज'

वाले

की नींव डाली।

- (10) शादी—ब्याह में, समझ में न आने वाले संस्कृत मंत्रों के बदले मराठी में सर्वबोधगम्य मंगल मंत्र बनाये और उनका प्रचार किया।
- (11) रायगढ़ स्थित शिवाजी महाराज की समाधि खोजकर उसे सुचारू रूप दिया।
- (12) सन् 1879 में बम्बई में मिल मजदूरों का पहला संगठन बनाया और मजदूर आंदोलन में श्री नारायण मेघाजी लोखंडे नामक अपने साथी की विशेष रूप से सहायता की।
- (13) जमींदारों के जुल्मों से पीड़ित किसानों की मदद की।
- (14) किसानों की दुर्दशा की ओर ड्यूक ऑफ कनाट तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का ध्यान दिलाया।
- (15) ग्रंथ लिखकर शूदों तथा अतिशूद्रों में जागृति की और उन्हें वरिष्ठ वर्गों की मानसिक दासता से मुक्त करने का प्रयास किया।
- (16) अपनी पत्नी को घर पर पढ़ा लिखाकर उसे अध्यापिका बनने योग्य बनाया जिससे वह पहली भारतीय अध्यापिका बनी।
- (17) उन्होंने पूना कन्स्ट्रक्शन कम्पनी बनाकर पूणे, मुम्बई में ऐतिहासिक इमारतें बनाई, खड़कवासला डेम बनाया। जो वर्तमान में मजबूती से उपयोग में आ रही है।
- (18) उन्होनें सामाजिक सुधारों के साथ ही कृषि जल संचयन फसल एवं बीज पर अनुसंधान कर कृषकों को आत्मनिर्भर बनाया।
- (19) उनकी कृषि बागवानी की लगभग 200 बीघा जमीन पर आधुनिक खेती करने की पहल की।
- (20) वे पुणे म्युनिसपल करपोरेशन के कारपोरेटर रहकर स्वच्छता, जल उपलब्धता कराने अधिक कराने अधिक लोगों को रोजगार दिलाने के उपाय किये।

इन्हीं सामाजिक शैक्षणिक आर्थिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में अभिनव कार्य किये, इसी कारण महात्मा गाँधी ने फुले को असली महात्मा कहा डॉ. भीमराव अम्बेड़कर ने उन्हें अपना गुरू माना एवं संविधान में फुले आदर्शों के अनुरूप समतामय समाज स्थापना हेतु मूलभूत अधिकार सम्पन्न बनाया।

रामनारायण चौहान



## आपसी बात



शिक्षा इशारा अब यह कालम इसिलये बना रहा है कि देश के अनेक भागों से मोबाइल/फोन पर बातिचत होती है इसका रिकार्ड भी रखना फर्ज समझ रहा है। तो आइये मो. 09990952171 या फोन नं. 01145082626 पर हमारे कार्यालय में जो भी बातचीत होगी उसके अंश प्रकाशित होते रहेंगें।

### माह - मई शे जून 2019

- मध्य प्रदेश जगदीश सैनी (जबलपुर), डॉ. प्रेमलता सैनी, छाया सैनी, आर.डी. माने, गजानंद भाटी जगदीश सोंलकी, अविनाश फसाटे, मधु अम्बाङ्कर, जी.पी. माली, राजेन्द्र अम्बाङ्कर, ओ.पी. राजनकर, राजेन्द्र कुमार सैनी (भोपाल), लीलाधर धारवे, गजानन्द रामी, लक्ष्मीनारायण चैहान (उज्जैन), डॉ. रामिकशन माली, पी.सी. हरोड़े(देवास), सी.एल. वर्मा. (नागदा), राधोगढ़, हेमलाल महाजन (बुराहनपुर), गुलाबचन्द मालाकार (खण्डवा), एड. हरीश गिलके, यादवलाल चौहानए सुनील टांक, (इन्दौर)
- महाराष्ट्र— ग्यानेश्वर गौरे (यवतमाल), शंकरराव लिंगे (सोलापुर), विनता लोण्डे, राजेन्द्र सैनी (मुम्बइ), शैलेश ओम प्रकाश बेरूलकर (अकोला),।
- उत्तरप्रदेश— इन्जि. एस.बी. सैनी (कानपूर) श्रीचन्द सैनी, योगेश सैनी (मेरठ),एड. विक्रम सैनी (सराहनपुर), अवनीश सैनी (गाजियाबाद), नारायण सिंह क्शवाहा (आगरा)।
- राजस्थान— हरगोपाल भाटी (झालावाड़), रामेश्वर गेहलोत (जोधपुर), पूनमचन्द कच्छावा,

बुधिसंह सैनी (जयपुर), मोतीबाबा फुले (फालना), बंशीलाल माली, प्रभुलाल माली बनेड़ा (भीलवाड़ा),

- गुजरात / गंगाराम गेहलोत, सुरेश माली (अहमदाबाद).
- छत्तीसगढ़— हरीश पटेल(बालोद), राजेन्द्र कुमार पटेल (दुर्ग) ।
- बिहार— संजय मालाकार (पटना), गौरी प्रसाद (पहलेजा), बी.एन.सिंह. सैनी (डेहरी—आनॅ—सान),मदन भक्त (भोजपुर) ।
  - हिमाचल प्रदेश— पी.डी.सैनी (कांगड़ा), ।
- हरियाणा— हेमन्त सैनी (रेवाड़ी), राजेन्द्र कुमार सैनी (लाड़वा), राजकुमार सैनी (गुड़गांव),
  - कर्नाटक एन.एल. नरेन्द्र बाबू (बैंगलोर),
- दिल्ली— चौ.इन्दराजिसंह सैनी, खुशीराम सैनी, आजादिसंह सैनी, रमेश कुमार सैनी, एड. के.पी.सिंह, विनय सैनी, आर.पी. सैनी, सुरेश सैनी, श्री पाल सिंह सैनी, खूशीराम सैनी, जी.एल. सैनी, कृष्णदेव भारल, सुमन सैनी, डी.पी. सैनी ।
  - जम्मू एण्ड कशमिर- श्री कृष्ण सैनी (जम्मू) ।
  - तमिलनाडू— व्ही. एम. पल्लव मोहम वर्मा
    वैन्नई)।

### सामाजिक चिंतन (भाग-25)

## सामाजिक एकजूटता के लिए विश्वसनीय बनना होगा

किसी भी संस्था, समाज सभा, संगठन, संघ, महासंघ, महासभा, परिषद, का निमार्ण एक दुसरे का विश्वास एवं दिल जीतकर समाज के उत्साहित, जागरूक, परोपकारी, जनसेवी, समाजसेवी लोगों का एक समूह के बिना संभव नहीं है। फिर कोई भी संस्था किसी उद्देश्य लक्ष्य कार्यक्रम को लेकर ही बनाई जाती है। बनाने वालों का आत्म विश्वास होता है, और इसी कारण संस्था बनने पर जो काम करती है, उसके पदाधिकारी एक दुसरे की टांग खिचांई जब-तक नहीं करते संस्था अपने उद्देश्यों लक्ष्यों को पाने हेतु कोई न कोई उपक्रम कार्यक्रम करती है। और जो कार्यक्रम होते है, यदि वे पोरपकार-समाज सेवा की भावना से पदाधिकारीगण करते है उन्हें सभी का अपार सहयोग तन-मन-धन का मिलता रहता है. और बड़े से बड़े लक्ष्यों को पा सकते है। और पाने की लालसा से निरन्तर कुछ पदाधिकारी इमानदारी से घर-बार की सेवा, देखभाल के साथ-साथ समाज सेवा करते हुऐ सम्मान भी पा रहे है।

यह भी देखने में आता है कि जो भी पदाधिकारी अपनी वाहवाही अपने मान सम्मान अपनी महत्वकांक्षा के लिए करते है, उनको लम्बी अवधि तक सहयोगी लोग नेतागिरी स्वीकार नहीं कर पाते हैं। और एक न एक दिन ऐसे स्वार्थी तत्वों को भले ही पदाधिकारी बना लिया है या बन गया है। चाहे चुनाव से या आपसी सहमित से किन्तु ऐसे लोगों की स्वीकार्यता पर संन्देह उत्पन्न हो जाता है, और समय आने पर उन्हें संस्था के पद से अलग—अलग होना ही पड़ता है। कुछ अंहकारी अलग—अलग नई—नई संस्था बनाकर उससे जुड़ेलोग जब अलग होने लगते है, तब ऐसी संस्था बन्द सी हो जाती है। या घिसटती रहती है।

कोई भी संस्था बनने के बाद उसकी विश्वसनीयता बनाने हेतु उसे सरकारी विभाग से रजिस्टर्ड कराना ही चाहिये, फिर सरकारी हेतु आवश्यक पाने लेखा-जोखा बनाकर प्रतिवर्ष सभा में रखना जरूरी है, फिर आयकर विभाग में पंजीकृत कर आयकर की धाराओं के तहत लाभ पा सकते है। प्रतिवर्ष नियमानुसार शासन के विभाग को रिटर्न विधिवत रूप से भेजना जरूरी है। चाहे छोटी, मध्यम, वृहद कितनी ही बड़ी संस्था हो उसे लेखा जेखा से युक्त रखने का दायित्व पदाधिकारी होता है। और जहाँ विश्वास होता है, वहां सफलता मिलती है।

फिर संस्था बनने के बाद सहमित से कार्यक्रम बनाकर समाज हितो की गतिविधियां करना पदाधिकारियों का दायित्व है यदि परोपकार के कार्य जनमानस के सामने आयेंगे तो तन—मन—धन से भरपुर सहयोग सहायता भी मिलती रहेगी, इसी कारण वर्षों पुरानी संस्थाओं द्वारा शिक्षण, प्रशिक्षण,

संस्थान संचालित है। समाज हित की धर्मशाला बनाई स्वास्थ्य सेवा के केन्द्र बनाये सहकारी समितयां बनाकर परस्पर लाभ के कीर्तिमान स्थापित किये युवक-युवति परिचय सम्मेलन आदर्श सामृहिक विवाह के सफल आयोजन करके समाज के हितों को आगे बढा रहे है। समाज में व्याप्त कुरितियां धीरे-धीरे समाप्त करने की दिशा में समाज सेवी पहल करते है। सामूहिक आयोजन से फिजुलखर्ची रूकती है, और जो धन बचता है, उससे परिवार की पीढ़ीयों को शिक्षित, प्रशिक्षित, उद्योग, व्यापार में पूँजी लगाकर अपने परिवार का तो भला करते ही है, और समाज हितेषी कार्यों के लिए योगदान देने की भावना भी पनपती है। एक तो बचत होती है, दुसरी और समाज का सम्मान, उसका यश पँहु ओर फैलाता है। यह सब परस्पर विश्वसनीयता से ही संभव हो सकता है।

जो समाज एकजूट है, वह सभी दिशा में आगे भी बढ़ रहा है, उसके समर्पित कार्यकर्ता सामाजिक सम्मान के साथ राजनैतिक वर्चस्व भी हासिल करते है । एकजुटता से आशय हमें किसी न किसी व्यक्ति को अपना मुखिया स्वीकार करना ही होगा, और स्थानीय मुखिया बनाकर ये मुखिया गण कस्बा, तहसील, जिला, संभाग, प्रदेश व राष्ट्रीय स्तर पर इसी विश्वसनीय से अपनी एकजूटता स्थापित कर सकते है, और कई समाज अपनी एकता की शक्ति प्रकट भी करते है। इसी कारण थोडी सी नाममात्र की जनसंख्या वाले समाज सभी स्तर पर अगवानी राज कर रहे है। शासन प्रशासन पर कब्जा करने में सफल हो रहे है।

जरा चिन्तन करिये अपना समाज बड़ी जनसंख्या में 10: से अधिक होने पर भी समाज कार्यकर्ताओं की भागीदारी प्रायः शून्य तक वर्षों से बनी हुई है, क्या कारण है, हम एक दुसरे की आलोचना करते है, टाँग खिंचाई करते रहते है, सामूहिक एकजूटता बना कर जन शक्ति का परिचय नहीं देते है। धनशक्ति का संचय ही नहीं करते, परस्पर योगदान क्यों नहीं करते शासन प्रशासन में क्यों पिछड़ रहे है। हमारी आवाज कहीं क्यों नहीं सुनाई देती है सोचिये यदि हमारे बीच कोई विश्वसनीय व्यक्ति नीचे से राष्ट्रीय स्तर तक सामने आ जाये तो सामाजिक एकजूटता से सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता।

करिये चिन्तन और एकजूटता बनाने हेतु विश्वसनीयता के साथ कार्यक्रम करिये जरूर सफलता मिलेगी।

रामनारायण चौहान

## प्रातः स्मरणीय हमारे समाज सुधारक

#### महामना फूले, शाहूजी महाराज, कार्ल मार्क्स

भूमिका :— पृथ्वी ग्रह पर एक ओर विषमता है काले, गोरों की अथवा सवर्ण—शूद्रों की जिससे संघर्ष दोनों में होता रहता है, तो वहीं दूसरी तरफ कुछ महापुरुषों की उपलब्धता, समता, मानवता स्थापित करने के लिए, बहुजन हिताय के लिए प्यासे को पानी मिलने के समान है।

तथागत बुद्ध के समय, लाओत्से एवं कन्पयूशियस पृथ्वी को अशान्ति से शान्ति की ओर ले जा रहे थे। जब द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त हुआ और विश्व दो भागों में बंट गया (1) अमेरिकी गुट (2) रूसी चीनी गुट (साम्यवादी) तब भारत के प्रधानमंत्री नेहरू जी, मिस्र के कर्नल नासिर, यूगोस्लाविया के मार्शल टिटो गुट निरपेक्षता का प्रयास कर रहे थे।

तथागत बुद्ध, कबीर की समता परक श्रृंखला को तेज धार देने वाले महामना फूले ने जिस बहुजन हिताय का प्रारम्भ 1827—1890 के मध्य किया उसी कार्य को भारत भूमि पर छत्रपति शाहूजी महाराज ने बखूबी आगे

कोल्हापुर नरेश छत्रपति शाहूजी का जन्म 26 जून 1874 को हुआ था। उनका बचपन का नाम यशवन्त था। तीन वर्ष में उनकी माँ तथा 10 वर्ष की उम्र में उनके पिता का साया उनके ऊपर से हट गया था। इस प्रकार बचपन में उन्हें अपना माता—पिता का भरपूर प्रेम वात्सल्य न मिल सका।

जिस प्रकार ब्राम्हण मित्र की शादी में प्राप्त अपमान ने महामना फूले को बदल दिया उसी प्रकार एक अवसर पर शाहूजी महाराज गोदावरी नदी में स्नान करने के बाद जब ब्राम्हण (पन्डे) ने बिना स्नान किये, पुराण के श्लोकों द्वारा ब्राम्हणी कर्मकाण्ड करवाया तो कोल्हापुर नरेश ने आपित प्रकट की। इस पर पन्डा बोला आप शूद्र हैं अतः आपके लिए मेरा स्नान करना, वेद का श्लोक पढ़ना बिल्कुल आवश्यक नहीं है।

शाहूजी महाराज ने सोचा कि जब एक राजा के साथ ऐसा व्यवहार हो रहा है तो यह कलम कसाई जन साधारण पिछड़ों, दलितों के साथ कितना अमानवीय व्यवहार करता होगा। उन्होंने 1902 में अपने राज्य में 50: आरक्षण पिछड़ों दलितों के लिए किया। डा0 अम्बेडकर को आर्थिक मदद शिक्षा में दी क्योंकि शाहूजी महाराज जानते थे कि पिछड़ों, दलितों के आगामी मसीहा डा0 अम्बेडकर ही होंगे।

शाहूजी महाराज ने जून 1873 में महामना फूले द्वारा स्थापित "सत्य शोधक समाज" को गाँव—गाँव ले जाकर ब्राम्हणी संस्कृति पर प्रहार करने के राज्य द्वारा संचालित गायक मण्डलियां बनवाईं, विधवा विवाह को राज्याश्रय दिया। बहुजन संस्कृति के उत्थान से पूना के पेशवा बेचैन हो गये, विशेषकर तिलक की बेचैनी अधिक बढ़ गयी। बाल गंगाधर तिलक ने एक ब्राम्हण को कोल्हापुर नरेश के पास भेजा कि आरक्षण देकर आप जातिवाद का रोग फैला रहे हैं।

शाहूजी महाराज उस ब्राम्हण को अपने अस्तबल





(घुड़साल) में ले गये। तथा मुँह में घोड़े के लगे झोलों का चना दाना एक मैदान में ढेर, एक स्थान पर करा दिया। बाद में सभी घोड़ों को चना—दाना खाना खाने के लिए छोड़ दिया। जवान, ताकतवर घोड़े तो चना—दाना खा सके परन्तु बूढ़े, कमजोर घोड़े दाना के स्थान पर ताकवर घोड़ों की लातें ही खाते रहे। ऐसा देख वह ब्राम्हण बिना तर्क वापस चला गया।

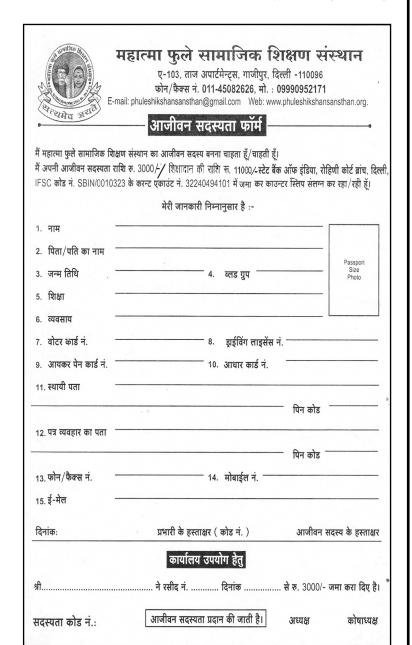
शाहूजी महाराज ने कहा कि बहुजन समाज की हालत कमजोर घोड़ों के समान है। आरक्षण द्वारा यह सामाजिक समता का छोटा सा प्रयास है अभी और काम भी करने हैं जैसे ब्राम्हण पुरोहितों के स्थान पर प्रशिक्षण देकर बहुजन समाज के पुजारी बनाये जायें। शिक्षा का प्रचार प्रसार कर अन्धविश्वास पाखण्ड से बहुजनों को निकाला जाये।

इसी क्रम में जर्मनी में जन्मे कार्ल मार्क्स 1818-1883 जन्म से पहले यहूदी थे, बाद में वे इसाई बन गये। कार्ल मार्क्स से पूर्व पश्चिम के तमाम दार्शनिकों ने गरीबों के प्रति चिन्तन मनन किया परन्तु उनका व्यवाहारिक लाभ वहाँ के गरीबों, उपेक्षितों को न मिल सका। कार्ल मार्क्स की जीवन शैली पर हीगल दार्शनिक का बडा प्रभाव था। उन्होंने अपने मित्र एन्जिल की मदद से गरीब, सर्वहारा मजदूरों, शोषितों के उत्थान के लिए पूँजीवाद को जघन्य अपराध बताया। धर्म को अफीम का नशा बताया। उन्होंने तमाम किताबें लिखीं परन्तु "दास कैपिटल" सर्वाधिक प्रसिद्ध है। वे प्रथम वैज्ञानिक समाज शास्त्री थे। कार्ल मार्क्स व्यक्तिगत सम्पत्ति के विरोधी थे। क्योंकि धन सम्पदा ही आदमी को लोभी, भ्रष्टाचारी बनाती है। वह वर्ग विहीन समाज की स्थापना करना चाहते थे। हर समस्या के हल हेतु कार्ल मार्क्स वाद, प्रतिवाद, संवाद को आवश्यक मानते थे।

बाबा साहब डा० अम्बेडकर जो कि अर्थशास्त्री एवं समाजशास्त्री भी थे उन्होंने 1954 में कार्ल मार्क्स की समालोचना तथागत बुद्ध से की है। आज भी विश्व मजदूरों के मध्य जुलाई 1854 का यह नारा सर्वाधिक पसन्द है "दुनिया के मजदूरों एक हो जाओ, तभी शोषण से मुक्ति होगी।"

अन्त में हम सबको अपने समाज सुधारकों के अधूरे स्वप्नों को पूरा करने का संकल्प लेना चाहिए तभी हम उनके सच्चे उत्तराधिकारी होंगे।

> पुश्वा शैनी (B.E.) पूर्व मण्डल अभियन्ता BSNL महामंत्री पंचशील शोशाइटी कानपुर मो0: 9415407576



From: Pre. Month

## A FORGOTTEN LIBERATIOR, THE LIFE AND STRUGGLE OF SAVITRI BAI PHULE

Nationalism enabled the aggressive castes to Vedic-brahmanic culture project the consciousness as the basis of Indianness. Their selfish ideals and interests became the national ideals and interests. Despite a variety of formulationfrom the nineteenth century pioneers of sociocultural regeneration such as Rammohun Roy, Dayananda, Vivekananda, to the rightist and leftist leaders of the Indian National Congress like Tilak, Gandhi, Nehru- the common denominator and trajectory of all of them was to selectively accommodate modernity within the traditional casteclass structure, thus maintaining the high caste privileges and dominance over the masses. The most successful, in concocting this brahmanical synthesis of continuity with change, was Gandhi who deftly straddled the worlds of politics and religion, playing the double role of a half-naked saint and a ruthless politician working at the behest of the rich and the powerful. The wily Brahmans and allied castes knew the value of Gandhi from the very beginning. They gratefully handed Gandhi the supreme leadership and put him on a pedestal so high that his real face remained invisible to the masses who mistook him for their Mahatma (ibid.).

It was this monolithic-brahmanic nationalism that came under frontal attack from leaders of the lower orders, the founders of anti-caste or non-brahman movements that erupted in many parts of the subcontinent during the colonial period. Aligning themselves with the long non-brahmanic tradition of resistance for equality and freedom of all they argued that the brahmanic religio- social system was more sinister than British colonialism, and therefore its annihilation must constitute an integral part of nation building.

Notwithstanding the multiplicity and diversity of articulations depending on time, space and regional variations, what the anti-caste leaders unmistakably stressed and struggled for, was social justice and social democracy. They fought pitched battles for doing away with caste and social justice and social democracy. They fought pitched battles for doing away with caste and social barriers. They took to the streets for civil and human rights of the casteoppressed. They stood for a new society based on non-brahmanic and democratic values. These leaders who struggled for the deconstruction of brahmanism and demanded socio-cultural reconstruction have been dismissed in the dominant discourse as sectarian, caste representatives, while those who variously defended Brahmanism under the fig leaf of cultural nationalism are glorified as national leaders of vision and integrity (Mani 2005).

Jotirao Phule, and his wife Savitribai, were the first in modern India to declare war on brahmaniccasteist culture and religion. This Maharashtrain couple Presented the first major anti-caste ideology and led a mass activism against the ascriptive norms and values. Their distinct brand of sociocultural radicalism was based on uniting all the oppressed, whom they would call stree-shudraatishudra. (Literally, stree means women, shudra is productive servile caste at the bottom) of the caste hierarchy, and atishudra means 'those beyond the shudras', earlier despised as outcastes, or untouchables. In contemporary language, shudras and ati-shudras are other backward classes and dalits, respectively. But phules included in their notion of the oppressed, other marginalised groups as well such as adivasis and Muslims.)

After a century of elitist trivialization Mahatma Jotiba Phule (as he is popularly known) belatedly recognized as the father of Indian social revolution. An organic thinker and system builder, he founded the Satyashodhak Samaj (the society of Truthseekers) in 1873, the first grassroots anti-caste organisation, and wrote many subversive books, including the whole structure of hierarchy and oppression; his delineation of knowledge-power nexus; his deconstruction of brahmanic myth-history and attempts to replace it with an alternative reading

### BY:- BRIJ RANJAN MANI & PAMELA SARDAR

of the past and present; his subversion of brahmanic religion and scriptures; his highly gendered view of women's oppression and symbiosis between caste and patriarchy; his super exposure of the emergent Hindu-brahmanic nationalism as an extension of obscurantist, self-strengthening movement of the caste elites; and above all, his life-long campaigns for democratisation of education, have been highlighted in some scholarly and popular writings (Keer 1998, Mani 2005).

Savitribai Phule (1831-97), struggled and suffered with her revolutionary husband in an equal measure, but remains obscured due to casteist and sexist negligence. Apart from her identity as Jotirao Phule's wife, she is little known even in academia. Modern India's first woman teacher, a radical exponent of mass and female education, a champion of women's liberation, a pioneer of engaged poetry, a courageous mass leader who took on the forces of caste and patriarchy certainly and her independent identity and contribution. It is indeed a measure of the ruthlessness of elitecontrolled knowledge-production that a figure as important as Savitribai Phule fails to find any mention in the history of modern India. This is not to deny the works by Marathi authors such as M G Mali G B Sardar, Hari Narke, and Phulwantabai Zodge who have attempted to highlight her outstanding public life and contribution. Her life and struggle, however, deserves to be appreciated by a wider spectrum, and made known to non-Marthi People as well. This collection of write-ups is a modest attempt in that direction.

Before underlining the significance of her struggle, let us touch upon the uniquely beautiful relationship that the Phule couple shared with each other. What made their match unparalleled, even in public life. She was still a teenager when she started involving herself in educational activities with her husband-playing an equally important role in founding and running schools for women and dalitsin the face of opposition from the orthodoxy whose power and authority she challenged. Savitri was only 18 and Jotirao was 22 years old when they were maligned, ostracized, and finally turned out of their own home by Joti's Father who Feared a high caste backlash for educating dalits and women, traditionally debarred under the brahmanic scheme from the right to education. Just imagine, two young People in love taking on the home and the world not for their romance but for liberating the shackled and the crushed-with a majestic belief that every woman. every child and every man has a right, a divine right, a natural right, to get educated and remake their life. What is more remarkable, they kept alive this revolutionary spirit throughout their lives, setting a benchmark in social and political engagement that has few parallels anywhere.

To Savitibai and Jotirao, the Idea of Justice and fairness, of equality between man and woman seems to have been instinctive. Perhaps, it was more so in the case of Savitribai as she suffered more as a woman. She never needed convincing for the need of an inclusive and compassionate world. She had her conviction already from the start-straight and clear. Does that make her less revolutionary than the latter-day privileged radicals and feminists who have better mastered the dialectics and duality of the human world but struggle to enact their subversive intellectual constructs in their own lives, let alone animating other people's lives?

Savitribai's life and struggle is an excellent answer to the heart cry of Marx, a revolutionary thinker, "Philosophers have only understood the world in various ways; the point, however, is to change it." She did not understand the world in different ways; she understood it in one simple way-the necessity and possibility of making it more humane, more inclusive, more compassionate.

What makes her important is that she lived up to this simple understanding in a magnificent way.

Savitribai's role in the anti-caste and women's struggle is unique. She emerges as the only woman leader among all social movements in nineteenth century India who linked Patriarchy with caste. The nineteenth century is celebrated in history textbooks as the century of glorious socio-cultural regeneration led by an array of luminaries such as Rammohun Roy, Dayananda, and Vivekananda. What is not stated is the fact that the Indian Renaissance, confined to the upper echelons of society, was closely intertwined with the hegemonic neobrahmanic Hinduism and the self-strengthening cultural nationalism. Savitribai Phule, on the other hand, was in the forefront of a socio-cultural struggle that challenged the tendency to focus only on higher social groups- Brahman and allied castes. She encouraged a reversal of traditional subservient roles of women and depressed castes.

Apart from setting up the first ever school for women in India, Savitribai started a women's association called Mahila Seva Mandal as early as 1852. The association worked for raising women's consciousness about their human rights and other social issues. Being a woman, she easily recognized the double downtroddenness of most women as she saw the gender question in relation to caste and brahmanic patriarchy. She engaged herself at various levels to address women-specific problems. She campaigned against victimization of widows. She advocated and encouraged widow remarriage. She canvassed against infanticide of 'illegitimate' children. She opened a home to rehabilitate such children. Her won home became a sanctuary for deserted women and orphaned children. She went on to organize a successful barbers' strike against the prevailing practice of shaving of widows' heads. She did all this taking grave personal risks. Many of these misogynistic practices have now receded in the background. But in her time, they tormented and destroyed countless women. Maligned, humiliated, and attacked for challenging the anti-women practices, Savitribai's struggle encouraged and inspired a whole generation of outstanding campaigners for gender justice in Maharashtra- Dr. Anandi Bai Gopal Joshi, Pandita Ramabai, Tarabai Shinde, Ramabai Ranade, and many others have been inspired by her efforts.

Few People know that Savirtibai Phule was a trailblazing poet of modern Marathi and an intensely committed writer. Her poetry and her letters to Jotirao, which are includern Marathi and an intensely committed writer. Her Poetry and her letters to Jotirao, which are included in this collection, bring out her sensitive and revolutionary mind. She was also an able orator who thought it worthwhile to publish two collections of her won important speeches. She also collected, edited, and published speeches of jotiba phule. Caste and patriarchy have been the prime targets of her intellectual engagement. Above all, her writings give the imperession of an ignited mind that wanted to kindle a similar spirit in other people's lives. She was an ardent advocate of modern education and the English Language. "Learn English to annihilate caste" was a common refrain in some of her Poems.

Savitribai Phule was a top leader of the Satyashodhak Samaj. She loked after its day-today functioning. She headed the women's wing of the samaj. She led the Satyashodhak Volunteers in many social campaigns and engagements. After Mahatma Phule's death, She assumed the leadership of the Samaj on the request of many Satyashodhaks who reposed their faith in her for her integrity, commitment, and long involvement in social activism. She also presided over the 1893 session of the Samaj. She led the Samaj from the fron during the famine and the plague epidemic of 1896-97.



# देश भर के समाचार

- छिन्दवाड़ा (मप्र.):— 9 जून को महात्मा फुले भवन नोनिया करबल सब्जी मण्डी में महात्मा फुले समिति की बैठक में 1. फुले भवन की सरकारी जगह का सीमांकन कराने 2. महात्मा फुले उद्यान में टयूबवेल लगाने 3. भवन निमार्ण हेतु पहल का निर्णय लिया । उक्त जानकारी राजेश दौड़के ने दी।
- सोलापुर (महा.):— 6 जून को महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान के पूर्व अध्यक्ष शंकरराव लिंगे राष्ट्रीय अध्यक्ष आ. भा. माली महासंघ की उपस्थिति में सामाजिक मिटिंग हुई।
- मेहकर बुलढ़ाणा (महा.):— 3 नवम्बर को समाज द्वारा युवक—युवति, पालक परिचय, सत्यशोधक विवाह, प्रतिभावन विद्यार्थियों का सम्मान समारोह सम्पर्क किरण इंगोले 9822522448 अभय तायडे 9011709779 ।
- नागपूर (महा.):— 9 जून को घरकूल डाटकाम प्रापर्टी गेलरी में समाज की मिटिंग हुई, मधुसूदन देशमुख , गोविंद वैराले, केलाश जामगडे वसुधा येनकर आदि उपस्थित।।
- पोकरण (राज.) रेणु सैनी एस.डी.एम. के पद पर नियुक्त होने पर बधाई।
- जयपुर (राज.):— रमेश सैनी पूर्व चेयरमेन सफाई समिति नगर निगम पुनः निर्वाचित। बधाई।
- जोधपुर(राज.):— सैनी आफिशियस गुरूकुल में आर.ए. एस. / आई.ए.एस. निशुल्क कोचिंग प्रवेश परीक्षा 9 जून को जयपुर जोधपुर बीकानेर, गुजरात, महाराष्ट्र, हिम्मत नगर तथा ऑन लाईन आन्ध्र प्रदेश बिहार यूपी, एमपी, उत्तराखण्ड, के प्रतिभागियों ने भाग लिया। बधाई।
- दिल्लीः— श्रीमति श्वेता सैनी पार्षद को दक्षिणी दिल्ली नगर निगम की डिप्टी मेयर नियुक्त होने पर बधाई।
- आदिलाबाद (तेलांगना):— एड. राजेन्द्र महाडोले महाराष्ट्र का सम्मान समारोह किया। उक्त जानकारी महात्मा ुले सामाजिक शिक्षण संस्थान के सुकुमार पेटकुले ने दी।
- दिल्ली:— समाज के स्टूडेन्ट जो काम्पेटेटिव एकजाम की तैयारी कर रहे है। उन्हें दिल्ली के शिक्षाविद एवं समाज सेवी सुरेश सैनी की और से नोटस और बुक्स फी में उपलब्ध कराई जा रही है। बधाई । सम्पर्क 9414475464।
- सागर (मप्र.):— ऑल इंडिया सैनी माली सभा द्वारा 18 जून को युवक युवति परिचय सम्मेलन उक्त जानकारी दिलीप सैनी ने दी ।
- लक्ष्मणगढ़(राज.):— सैनी समाज के छात्र—छात्राओं को कक्षा 1 से 12वीं तक की पुस्तकें समाजसेवी गिरधारी लाल राकसिया सैनी द्वारा प्रतिवर्षानुसार 11जून को महात्मा ज्योतिबा फुले विकास समिति कार्यकाल से वितरित की। बधाई।
- डीसा (राज.):— श्री मित शिल्पा बेन पाली डिसा नगर पालिका की प्रमुख बनने पर बधाई।
- कपासन– भीलवाड़ा(राज.):– मिट्ठूलाल माली ने पंचायति भवन के लिये भूमिदान की । बधाई उक्तजानकारी बन्शीलाल माली ने दी ।
- शेरकोट बिजनौर (उप्र.):— अर्न्ताराष्ट्रीय सैनी समाज मार्गदर्शक एवं एकता संघ के अध्यक्ष पवन सैनी महामंत्री नरेश सैनी ने बताया कि विधायक कमलेश सैनी ने सैन्य भर्ति तैयारी हेतु चार दिवसीय केम्प का उद्घाटन किया।
- लखनऊ (उप्र.):— ध्रुव कुशवाह ने मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट टाप 10 में देश में आठवीं रैंक प्राप्त की इनकी माता अनीता एवं पिता कुशवाहा दोनों ही डॉ. है। बधाई ।
- संभल (उप्र.):— ज्वालेश श्रीमाली मण्डल अध्यक्ष आ.भा. श्रीमाली महासभा ने शुभकामनायें दी।
- संग्रामपुर (महा.):— कु.चैताली बेरूलकर एवं प्रदीप नागापरे का सत्यशोधक रीति से 12जन को विवाह । बधाई।
- नागपूर (महा.):— आ.भा.माली महासंघ जिला द्वारा 14 जुलाई को प्रतिभावन विद्यार्थियों का सम्मान समारोह आयोजित मधूसूदन देशमुख, अर्जन राऊत, अरूणा ताई डांगोरे ने उक्त जानकारी दी।
- नीम का थाना (राज.):— विक्रम सैनी 10 वीं बोर्ड में 87 प्रतिशत् अंक पाने पर बधाई।
- अमरोहा (उप्र.):— अखिल भारतीय श्रीमाली महासभा इकाई की मिटिंग ज्वालेश श्रीमाली की अध्यक्षता में हुई जिसमें सुभाष श्रीमाली अध्यक्ष गौरव श्रीमाली महांमत्री रविकुमार संयोजक बनाया।
- पाली (राज.):— रानी (फालाना) में बालिका छात्रावास हेतु ढ़ेड बीघा जमीन समाज गौरव नरेन्द्रसिंह कच्छावाहा ने दान की । 13 जून को आयोजित मिटिंग में महापुरूषों के आदर्शों को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया समाज के वरिष्ठ मोतीबाबा फुले, चंपालाल, कान्तिलाल, जंयतिलाल, शिवरतन, ताराचन्द आदि उपस्थित थे।

- जयपुर (राज.):— माली सैनी समाज विकास आदर्श संस्था के अध्यक्ष रमेश सैनी फरमें वाला ने बताया 16 जून को युवक युवति परिचय सम्मेलन वैशाली नगर में आयोजित।
- कोटकासिम अलवर (राज.):— सैनी समाज के तत्वधान में प्रथम प्रतिभा सम्मान समारोह इन्जि. निरंजन लाल सैनी की अध्यक्षता जितेन्द्र खुराड़िया युवा अध्यक्ष, रूपिकशोर सैनी, रामपाल बाबूजी, देवेन्द्र सैनी के अतिथ्य में हुआ।
- मुम्बई (महा.):— महारष्ट्र सरकार में 16 जून को हुए मंत्री मंडल में माली समाज के अतुल सावे को शामिल किया। बधाई।
- मुम्बई (महा.):— महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान के सदस्य डॉ. प्रकाश ढ़ोकने द्वारा डॉ. बाबा साहेब अम्बेड़कर मराठावाड़ा विद्यापिठ से नागेश गवली को डॉक्टरेट (पी.एच.डी) पदवी मिलने पर अभिनन्दन किया गया ।
- जोधपुर(राज.):- विकास सैनी को असिसेंट कमांडेड बनने पर बधाई ।
- जयपुर (राज.):— आर.पी. एस. रघुवीर सैनी के आर.पी. एस. एसोशियेशन का निर्विरोध अध्यक्ष बनने पर बधाई।
- अलवर (राज.):— श्रीमित कमलेश सैनी पूर्व सभापित नगर परिषद के नेतृत्व में पौधा रोपण हुआ।
- गंगापुर (राज.):— माली समाज के नव निर्वाचित पदाधिकारीयों में गोर्वधनलाल गेहलोत, गजेन्द्र गेहलोत महामंत्री भेरूलाल तुन्दवाल, बरदीचन्द सिंगोदिया अध्यक्ष गोर्वधन मारोठिया कोषाध्यक्ष है।
- अजमेर (राज.):— माली (सैनी) धर्मशाला कार्यकारिणी की मिटिंग चेतन सैनी अध्यक्ष हनुमान प्रसाद कच्छावा संरक्षक हेमराज सिसेदिया सचिव, इन्द्रसिंह पंवार उपाध्यक्ष एवं पदाधिकारीयों का स्वागत हुआ।
- भीलवाड़ा (राज.):— माली सैनी महासभा शहर में 30 जून को आयोजित समारोह में 2 जून 13 को आयोजित आदर्श सामूहिक विवाह के जोड़ो को एफ. डी.आर. वितरण एवं प्रतिभावन सम्मान समारोह बंशीलाल माली एवं गोपाल लाल माली ने उक्त जानकारी दी।
- टोड़ा रायसिंह (राज.):— चार भुजनाथ भासू में 129 जोड़ो को आदर्श सामृहिक विवाह समारोह हुआ। बधाई।
- गुडा बालोतान उम्मेदपुर (राज.):— संत लिखमीदास भवन में माली समाज के प्रतिभावन विद्यार्थियों का सम्मान समारोह सम्पन्न।
- जयपुर (राज.):— मोरक्को द्वारा इंडियन सांसाइयटी ऑफ एग्री बिजनेस प्रोफेशनल्स एवं ओबीसी फाउन्डेशन द्वारा कुमार सैनी को "किसान वैज्ञानिक पुरस्कार 2019 कृषि में उत्कृष्ट कार्य एवं नवाचार करने के लिए पुरस्कृत हुए।
- धार (मप्र.):— संकल फूलमाली समाज द्वारा 19वाँ सामूहिक विवाह समारोह में 7 जोड़े का विवाह हुआ।
- देवली टोंक (राज.):— फूलमाली सैनी समाज आवां के तत्वधान में 40 जोड़ों का विवाह हुआ। पूर्व मंत्री प्रभुलाल सैनी सांसद एवं प्रदेश भाजपा अध्यक्ष मदनलाल सैनी ने आर्शावाद दिया।
- रेवाड़ी (हिरियाणा):— कराटे चेम्पियन गोल्ड मेडल विजेता यश सैनी निवासी धारूहेड़ा का उमेश सैनी ब्लाक अध्यक्ष की अध्क्षता में आयोजित आयोजन में सम्मानित किया।
- पिड़ावा झालावाड़ (राज.):— समाज सेवी रामनारायण बानीवार ने 21 जोड़ों का सामूहिक विवाह सम्पन्न कराया। बधाई ।
- खानपुर(राज.):— सर्व माली समाज द्वारा बिना भेदभाव के सभी को शिक्षा दिलाने हेतु डॉ.जी.एल. वर्मा मुकेश बघेल, सीता भाटी, भवानी शंकर, हरगोपाल भाटी, प्रेमचन्द सुमन, रामलाल रावल अतिथियों ने संकल्प दिलाया।
- जालन्धर (पंजाब):— अजीत सैनी जूनियर मॉडल सीनियर सैकेंडरी स्मार्ट स्कूल में बनेगा जिले का पहला कल्चरल थियेटर।
- रामपुर (उप्र.):— अखिल भारतीय मौर्य महासभा के यशपाल सिंह मौर्य की उपस्थिति में शंकर सैनी को जिला अध्यक्ष बनाया।
- रूढ़की (उख.):— 7 जुलाई को पिताम्बर फार्मस शेरपुर में सैनी प्रतिभा सम्मान समारोह में हाई स्कूल एवं इण्टरमीडियेट सीबीएसई में 70% एवं उत्तराखण्ड बोर्ड में 65% प्राप्त एवं उत्तराखण्ड को युगपुरूष बाबा रामदेव द्वारा सम्मान। उक्त जानकारी अनुज सैनी ने दी।
- अमरपुर (राज.):— संत शिरोमणी लिखमीदास की जंयति
   जुलाई को मनाई जाएगी। उक्तजानकारी हरगोपाल भाटी
   ने दी।

- डीडवाना (राज.):— 8 नवम्बर को सैनी समाज सामूहिक विवाह सम्मेलन होगा।
- अकोला (महा.):— 16 जून को अ.भा.भारतीय माली महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष शंकरराव लिंगे ने मनीष भाऊ हिवराले को जिला अध्यक्ष बनाया। बाद में महाराष्ट्र पूर्व मंत्री सुधाकरराव गणगणे से उनके निवास पर भेंट की ।
- जयपुर (राज.):— रागिनी गेहलोत सुपुत्री सीमा देवेन्द्र गेहलोत ने एम.बी.बी.एस. प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने पर बधाई।
- गरियाबंद राजीम (छग.) सामाजिक पदाधिकारियों द्वारा विधवा और परित्यक्ता विवाह सम्पन्न कराया। उक्त जानकारी प्रदेश अध्यक्ष राजेन्द्र नायक ने दी ।
- जोधपुर (राज.):- प्रेम चन्द सांखला शिक्षाविद जिला अधिकारी से उप निर्देशक बनने पर बधाई।
- चण्डीगढ़ :— डॉ. राजश्री सैनी आई. पी. एस. अधिकारी हरियाणा आई. जी. बनने पर बधाई।
- जयपुर (राज.):—जिला माली (सैनी) समाज संस्था के मुख्य संरक्षक श्रीकृष्ण सैनी संरक्षक ओम राजोरिया अध्यक्ष ग्यारसीलाल सैनी एड. बनाये गये उक्त जानकारी रोशन सैनी अध्यक्ष ने दी ।
- हरिद्वार (उ.ख.)— कुशवाहा, क्षत्रिय समाज के जे.डी. कौशल सैनी, एड. सैनी ने प्रतिभावन विद्यार्थियों को सम्मानित किया ।
- भोपाल (मप्र.):— 25 अगस्त को फूल माली समाज के मेघजी विद्यार्थियों का 11वाँ राज्य स्तरीय प्रतिभा सम्मान समारोह होगा। राजेश सैनी को संयोजक बनाया है।
- मोहाली (पंजाब)— सैनी सभा के प्रधान हरजीत सिंह लोंगिया ने बताया कि ब्लड डोनेशन केम्प में रक्तदाताओं एवं स्टाफ को प्रतीक चिन्ह एवं प्रमाण पत्र—प्रदान किये गये।
- माधोपुर (राज.):-सीताराम सैनी द्वारा विद्यार्थियों को पाठ्य पुस्तकों एवं फल वितरण किया। एड. रामिकशन सैनी, सुमित्रा सैनी, मंजु सैनी आदि उपस्थित थे।
- हैदराबाद (तेलंगाना):— झूमरमल सैनी (चुनवाल) निवास चुरू प्रवासी पूना महाराष्ट्र को यूनिवर्सिटी ऑफ स्वाहिली पनामा अमेरिका ने सैनी को व्यवसाय प्रधन्धन में बिजली उपकरण एवं व्हीकल में विशेषज्ञता हासिल करने पर पी.एच. डी. की उपाधि प्रदान की। बधाई।
- मैनेचेस्टर / इंग्लैंड नेट गेंदबाज के रूप में टीम इंडिया से जुड़े नवदीप सैनी का शामिल किया है। सैनी करनाल हरियाणा निवासी है। यह गर्व की बात है।
- भीलवाड़ा (राज.) सर्व माली समाज की तहसील स्तरीय मिटिंग दही खेड़ा में बालिकशन सुमन की अध्यक्षता में हुई, जिसमें शिक्षा एवं समाज सुधार पर कार्य करने संकल्प लियां कार्यकारिणी में सुरेश सुमन अध्यक्ष, दिनेश सुमन उपाध्यक्ष, बाल किशन सुमन कोषाध्यक्ष एवं कमलेश सुमन महासचिव, सुरेश सुमन महामंत्री बनाये।
- पिंपरी पुणे (महा.)— सावित्रीबाई फुले स्मारक के लिए तथा यहाँ ग्रन्थालय, अभ्यासिका जानकारी केन्द्र स्थापित करने हेतु महापौर राहुल जाधव ने आयोजित बैठक में महापौर ने रू. पांच करोड़ की लागत से ऐतिहासिक भवन बनाया जायेगा। महापौर को बधाई।
- छत्रपति शाहू आरक्षण महाराजा देने वाला प्रथम राजा, जो पालक अपनी संतान को स्कूल नहीं भेजता था उस पर एक रूपया दण्ड लगाने वाला राजा, कला संस्कृति खेल कूद शिक्षा के लिए राजाश्रय देने वाला राजा, अंधश्रद्धा, कर्मकाण्ड, दैववाद पर प्रहार करने वाला राजा डॉ.बाबा साहेब भीमराव अम्बेड़कर के घर जाकर सम्मान करने वाला राजा अपने सभी क्षेत्रों में पहचान रखने वाला राजा राजश्री छत्रपति शाहू महाराज का 26 जून को जन्म दिवस महाराष्ट्र में अनेक संस्थाओं ने मनाया।
- उज्जैन (मप्र.):— श्री गुजराती रामी माली समाज की प्रांतीय बाड़ी एवं नरसिंह घाट धर्मशाला समिति की मिटिंग में निर्णय लिया कि 28 जुलाई को धर्मशाला में चुनाव आयोजित होंगे। मिटिंग में यादवलाल चौहान प्रदेशाध्यक्ष सत्यनारायण

चौहान पार्षद गोपाल माली अध्यक्ष धर्मशाला सिमिति शिवनारायण जागीरदार, लीलाधर आड़तिया, गिरधारी लाल, गौड़, पूनमचन्द माली, नागूलाल चौहान, जगदीश डोडिया, आन्नदी पटेल आदि उपस्थित थे । उक्त जानकारी विनोद मकवाना पूर्व अध्यक्ष गंजानंद रामी ने दी ।

